हालाते जहन्नम

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही
बुलन्दशहरी (रह०)

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही
बुलन्दशहरी (रह०)

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

किताब का नाम: हालाते जहन्नम

लेखक: मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रथम संस्करण: 2006

पृष्ठ: 60

मूल्य: 20/-

प्रस्तुत-कर्ता:
मुहम्मद नासिर ख़ान

कम्पोज़िंग:
अब्दुल तव्वाब

प्रकाशक:

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com, faridbook.com

HAALAAT-E-JAHANNAM

Author: Maulana Muhammad Ashiq Ilahi Bulandshahri (Rah.)

Ist Edition: 2006

Price: Rs. 20/-

Composed by: Abdul Tawwab

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

(1) दोज़ख़ के हालात

	अपनी बात	06
1.	हालाते जहन्नम	07
2.	दोज़ख़ की गहराई	07
3.	दोज़ख़ की दीवारें	08
4.	दोज़ख़ के दरवाज़े	08
5.	दोज़ख़ की आग और अंधेरा	08
6.	दोज़ख़ के अज़ाब का अंदाज़ा	09
7.	दोज़ख़ का सांस	10
8.	दोज़ख़ का ईंधन	11
9.	दोज़ख़ के तबक़े	12
10.	दोज़ख़ की ख़ास गरदन	14
11.	आग के सुतूनों में बंद कर दिए जाएंगे	14
12.	दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तादाद	15
13.	दोज़ख़ का ग़ैज़ व ग़ज़ब	15
14.	दोज़ख़ की बागें (लगामें) और उनके खींचने वाले फ़रिश्ते	18
15.	दोज़ख़ के सांप और बिच्छू	18
16.	दोज़ख़ में मौत न आएगी और अज़ाब हल्का न होगा	19
17.	दोज़ख़ की आवाज़ 'हल मिम मज़ीद'	20
18.	सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी	20
19.	दोज़ख़ियों का खाना-पीना	21
20.	ज़री यानी आग के कांटे	21
21.	ग़िस्लीन (घावों का धोवन)	22

22.	ज़क़्क़ूम (थोहड़)	22
23.	ग़स्साक़ (पीप)	24
24.	माइन कल मुहलि (कीट)	24
25.	माइन सदीद (पीप का पानी)	25
26.	माअन हमीमन (खौलता हुआ पानी)	25
27.	तआमन ज़ा गुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)	25
28.	अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े	27
29.	सद्द (गर्म पानी)	27
30.	मक़ामिअ (गुर्ज़)	27
31.	खाल पलट दी जाएगी	28
32.	अलग-अलग सज़ाएं	28
33.	इल्म छिपाने वाले की सज़ा	28
34.	शराब या नशे वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा	29
35.	बे-अमल वाइज़ों की सज़ा	29
36.	सोने-चांदी के बरतन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा	30
37.	फोटो-ग्राफर की सज़ा	30
38.	खुदकुशी करने वाले की सज़ा	31
39.	घमंडी की सज़ा	31
40.	दिखावटी आबिदों की सज़ा	31
41.	सऊद (आग का एक पहाड़)	32
42.	सिलसिला (बहुत लंबी ज़ंजीर)	32
43.	तौक़	33
44.	गंधक के कपड़े	34
45.	दोज़ख़ के दारोग़ाओं के नाम	35

(2) दोज़ख़ियों के हालात

46.	दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद	37
47.	दोज़ख़ में ज़्यादातर औरतें होंगी	38
48.	दोज़ख़ियों की बदसूरती	38

49.	दोज़ख़ियों के आंसू	39
50.	दोज़ख़ियों की ज़बान	40
51.	दोज़ख़ियों के जिस्म	40
52.	पुल सिरात से गुज़र कर दोज़ख़ में गिरना	41
53.	दोज़ख़ की सूरत	43
54.	दोज़ख़ वालों से शैतान का ख़िताब	45
55.	गुमराह करने वालों पर दोज़ख़ियों का गुस्सा	46
56.	दोज़ख़ के दारोग़ाओं और मालिक से अर्ज़-मारूज़	47
57.	दोज़ख़ियों की चीख़-पुकार	49
58.	जन्नतियों का हंसना	51
59.	सोचने और इबरत हासिल करने के लायक़	52
60.	ख़ातिमा	57
61.	दोज़ख़ से बचने की कुछ दुआएं	57
62.	आख़िरी बात	59

❑ ❑ ❑

अपनी बात

بسم الله الرحمن الرحيم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला
रसूलिहिल करीम० अम्मा बअ़्द—

इस किताब में ना-चीज़ ने जहन्नम के हालात कुरआन की आयतों और नबी सल्ल० की हदीसों से लेकर उर्दू (और अब हिंदी) में लिखे हैं। लिखने की वजह यह है कि मुसलमानों की ज़बान पर दोज़ख़ का ज़िक्र तो आता ही रहता है, मगर इससे बचने और महफ़ूज़ रहने के कामों से इसलिए ग़ाफ़िल हैं कि इसके दिल दहला देने वाले अज़ाब और उन मुसीबतों से बे-ख़बर हैं जो दोज़ख़ियों पर गुज़रेंगी।

मुझे यक़ीन है कि जो मुसलमान इस किताब को ध्यान से पढ़ेंगे और क़ुरआन की आयतों और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीसों को सच्चा जानते हुए दोज़ख़ के हालात का मुराक़बा (सोच-बिचार) करेंगे वे आसानी से गुनाहों से बच सकेंगे और फिर उनका नफ़्स नेकियों के करने में ज़्यादा रोक भी न बनेगा। ख़ुदा करे दीन की दूसरी किताबों की तरह यह किताब भी मुसलमानों को दीनदार बनने में मदद दे और उनमें ज़्यादा से ज़्यादा मक़्बूल हो।

इसके साथ अगर आप जन्नत वालों के ऐश व आराम और हश्र के मैदान के वाक़िआत भी मालूम करना चाहें तो हमारी मशहूर किताबें 'मैदान-ए-हश्र' और 'ख़ुदा की जन्नत' को ज़रूर पढ़ें।

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि अपनी नेक दुआओं में इस ना-चीज़ को न भूलें।

—मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलंदशहरी
अफ़ल्लाहु अ़न्हु

हालाते जहन्नम

بسم الله الرحمن الرحيم

इस किताब को दो हिस्सों में बाँटता हूँ, एक 'दोजख़ के हालात', दूसरे 'दोज़ख़ियों के हालात'। पहले दोज़ख़ के हालात लिखता हूं, फिर दोज़ख़ियों के हालात लिखे जाएंगे।

وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ

वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़ु व-हु व यह्-दिस्सबील.

(1) दोज़ख़ के हालात

दोज़ख़ की गहराई

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने (दोज़ख़ की गहराई बयान करते हुए) फ़रमाया, अगर एक पत्थर जहन्नम में डाला जाये तो दोज़ख़ की तह में पहुंचने से पहले सत्तर साल तक गिरता चला जाएगा। —तर्ग़ीब

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत-ए-बाबरकत में बैठे हुए थे कि हमने किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि यह (आवाज़) क्या है? हमने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आपने फ़रमाया, यह एक पत्थर है, जिसको ख़ुदा ने जहन्नम के मुंह पर (तह में गिरने के लिए) छोड़ा था और वह सत्तर

साल तक गिरते–गिरते अब दोज़ख़ की तह में पहुंचा है। यह उसके गिरने की आवाज़ है। —मुस्लिम

दोज़ख़ की दीवारें

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ को चार दीवारें घेरे हुए हैं, जिनमें हर दीवार की चौड़ाई चालीस साल चलने की दूरी रखती है। —तिर्मिज़ी

यानी दोज़ख़ की दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तै करने के लिए चालीस साल ख़र्च हों।

दोज़ख़ के दरवाज़े

क़ुरआन शरीफ़ में दोज़ख़ के दरवाज़ों के बारे में फ़रमाया है:—

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ط لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ۝ (سورۂ حجر آیت ۴۳-۴۴)

व इन्-न जहन्-न-म ल-मौअ़िदुहुम अज्मईन॰ लहा सब्अ़तु अब्वाबिन लिकुल्लि बा-बिम मिन्हुम जुज़्उम मक़्सूम॰ (सूरः हिज्र, आयत 43-44)

तर्जुमाः और उन सबसे जहन्नम का वादा है जिस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।

"रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उसके लिए है, जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाए।" —मिश्कात

दोज़ख़ की आग और अंधेरा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ को एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया, तो उसकी आग लाल हो गई फिर एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग सफ़ेद हो गई

फिर एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग काली हो गई। दोज़ख़ अब काले अंधेरे वाली है। —तिर्मिज़ी

एक रिवायत में है कि वह अंधेरी रात की तरह तारीक (अंधेरी) है और दूसरी रिवायत में है कि उसकी लपट से उसमें रोशनी नहीं होती। —तर्ग़ीब

यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख़ की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया (जलाने को तो) यही बहुत है। आपने फ़रमाया, (हां इसके बावुजूद) दुनिया की आगों से दोज़ख़ की आग गर्मी में 69 दर्जा बढ़ी हुई है और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ी अगर दुनिया की आग में आ जाएं तो उनको नींद आ जाए। —तर्ग़ीब

क्योंकि दोज़ख़ की आग के मुक़ाबले में दुनिया की आग बहुत ही ज़्यादा ठंडी है इसलिए उसमें उनको दोज़ख़ के मुक़ाबले में आराम मालूम होगा।

दोज़ख़ के अज़ाब का अंदाज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दोज़ख़ियों में सबसे हल्का अज़ाब उस शख़्स पर होगा, जिसकी दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे, जिनकी वजह से हांडी की तरह उसका दिमाग़ खौलता होगा, वह समझेगा कि मुझे ही सबसे ज़्यादा अज़ाब हो रहा है, हालांकि उसको सबसे कम अज़ाब होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः क़ियामत के दिन एक ऐसे दोज़ख़ी को जो दुनिया में तमाम इन्सानों से ज़्यादा लज़्ज़त और ऐश में रहा था, पकड़ कर एक बार दोज़ख़ में ग़ोता दिया जाएगा फिर उससे पूछा

जाएगा, ऐ इब्ने आदम (आदम की औलाद!) क्या तूने कभी नेमत देखी है? क्या कभी तुझे आराम नसीब हुआ है? इस पर वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम! ऐ रब नहीं! (मैंने कभी आराम नहीं पाया) फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक ऐसे जन्नती को जो दुनिया में तमाम इन्सानों से ज़्यादा मुसीबत में रहा था, उसे पकड़कर जन्नत में ग़ोता दिया जायेगा फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम! क्या कभी तूने मुसीबत देखी है? क्या कभी तुझ पर सख़्ती गुज़री है? वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम, ऐ रब! मुझ पर कभी सख़्ती नहीं गुज़री और मैंने कभी मुसीबत नहीं देखी?

दोज़ख़ का सांस

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब ज़्यादा गर्मी हो तो ज़ुहर की नमाज़ देर से पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की सख़्ती दोज़ख़ की तेज़ी की वजह से होती है। (फिर फ़रमाया कि) दोज़ख़ ने अपने रब के दरबार में शिकायत की कि (मेरी तेज़ी बहुत बढ़ गई है, यहां तक कि) मेरे कुछ हिस्से दूसरे हिस्सों को खाए जाते हैं (इसलिए मुझे इजाज़त दी जाए कि किसी तरह अपनी गर्मी हल्की करूं) अल्लाह तआ़ला ने उसको दो बार सांस लेने की इजाज़त दी, एक सांस सर्दी के मौसम में और एक गर्मी के मौसम में, इसलिए गर्मी जो तुम महसूस करते हो, दोज़ख़ की लू का असर है (जो सांस के साथ बाहर आती है) और सख़्त सर्दी जो महसूस करते हो, दोज़ख़ के ठंडे हिस्से का असर है। —बुख़ारी शरीफ़

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दोपहर को हर दिन दोज़ख़ दहकाया जाता है।

फ़ायदाः— दोज़ख़ के सांस लेने से गर्मी बढ़ जाना तो समझ में आता है, लेकिन सर्दी का बढ़ना तो समझ में नहीं आता। असल बात यह है कि गर्मी में दोज़ख़ सांस बाहर फेंकती है और इस तरह दुनिया में गर्मी बढ़ जाती है और सर्दी में सांस अन्दर लेती है और इस तरह दुनिया की तमाम गर्मी खींच लेती है, इस वजह से सर्दी बढ़ जाती है।

कुछ उ़लमा ने इसकी यह तश्रीह[1] की है कि दोज़ख़ में जलाने ही का अ़ज़ाब नहीं है, बल्कि ठंडक का अज़ाब भी है। उम्मत-ए-मुहम्मदी सल्ल. के मश्हूर अह्ले कश्फ़ बुज़ुर्ग[2] हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ रह० का बयान है कि जिन्नात को आग का अज़ाब नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आग उनकी तबीअ़त है, बल्कि उनको बेहद ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। जिन्नात दुनिया में भी सर्दी से बेहद डरते हैं और सर्द हवा से जंगली गधों की तरह बद-हवास होकर भागते हैं। फ़रमाते थे कि पानी में न शैतान दाख़िल हो सकता है, न कोई जिन्न जा सकता है। अगर कोई उनको पानी में डाल दे, तो बुझकर फ़ना हो जाएंगे। यह भी फ़रमाते थे कि क़ातिलों को शैतान के साथ ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। यहां पहुंचकर ज़रा सबक़ हासिल करने वाली आँख खोलिए कि इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी को इन्सान नहीं बर्दाश्त कर सकता जो दोज़ख़ के सांस से पैदा होती है फिर भला दोज़ख़ की असली गर्मी और सर्दी कैसे बर्दाश्त करेगा। 'फ़अ़्तबिरू या उलिल अब्सार' कितने अफ़सोस की बात है कि करोड़ों इन्सान ऐसे हैं, जो इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी से बंचने का एहतिमाम करते हैं, मगर दोज़ख़ से बचने का उनको कुछ ध्यान नहीं।

दोज़ख़ का ईंधन

क़ुरआन हकीम में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:-

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ (سورۃ تحریم آیت ۶)

या अय्युहल्लज़ी-न आ-म-नू क़ू अन्फ़ु-स-कुम व अहलीकुम नारंव्-व क़ूदुहन्-नासु वल् हिजारतु **—सूरः तहरीम, आयतः6**

'ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख़ की

1. व्याख्या।
2. ऐसे बुज़ुर्ग जो कश्फ़ व करामात वाले हों (ग़ैर मामूली तरीक़े से कुछ ऐसी बातें जान लेना जो आम इन्सान न समझ सकें उसे कश्फ़ कहते हैं)

आग से बचाओ, जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।'

फायदा:– पत्थरों से क्या मुराद है? इसके मुताल्लिक़ हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है कि पत्थर जो दोज़ख़ का ईंधन हैं, वे किब्रीत (यानी गंधक) के पत्थर हैं, जो खुदा ने क़रीब वाले आसमान में उस दिन पैदा किए थे, जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा फ़रमाए थे। फिर फ़रमायाः ये पत्थर कुफ़्फ़ार (के अज़ाब) के लिए तैयार फ़रमाए हैं। –हाकिम

इन पत्थरों के अलावा मुश्रिकों की वे मूर्तियां भी दोज़ख़ में होंगी, जिनकी वे पूजा किया करते थे। सूरः अंबिया में अल्लाह तआला का इर्शाद हैः–

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ط أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ٥

इन्-न कुम व मा तअ्बुदू-न मिन दूनिल्लाहि ह-स-बु जहन्-न-म, अन्तुम लहा वारिदून॰

'ऐ मुश्रिको! बेशक तुम और तुम्हारे वे माबूद जिनकी खुदा के सिवा पूजा करते हो, सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे और तुम सब उसमें दाख़िल होगे।' –सूरः अम्बिया, आयत 98

दोज़ख़ के तब्क़े (दर्जे)

पहले गुज़र चुका है कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ط لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ٥

लहा सब्-अतु अब्वाबिन लिकुल्लि बाबिम्-मिन्हुम जुज़्उम-मक़्सूम॰
(सूरः हिज्र, आयत 43)

इस आयत की तफ़्सीर में 'बयानुल क़ुरआन' के मुअल्लिफ़ (लेखक) क़द्दस सिर्रहू लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है, सात तबक़े मुराद हैं, जिनमें तरह-तरह के अज़ाब हैं। जो जिस अज़ाब का हक़दार होगा,

उसी तबके में दाख़िल होगा, हर तबके का दरवाज़ा अलग-अलग है, इसलिए 'सात दरवाज़ों' के नाम से याद किया और कुछ लोगों ने कहा है कि सात दरवाज़े ही मुराद हैं और मक़्सद यह ब्यान करना है कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों की ज़्यादती की वजह से एक दरवाज़ा काफ़ी न होगा, इसलिए सात दरवाज़े बनाए गए हैं।

अल्लामा इब्ने कसीर क़द्दस सिर्रहू ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद नक़ल किया है कि आपने **'सब्-अतु अब्वाबिन'** (सात दरवाज़ों) के मुताल्लिक़ हाथों से इशारा करके फ़रमाया कि दोज़ख़ के दरवाज़े इस तरह हैं यानी ऊपर नीचे हैं। इस इर्शाद से भी यही मालूम होता है कि नीचे-ऊपर जहन्नम के सात तबके हैं और हर तबके का अलग-अलग दरवाज़ा है और क़ुरआन हकीम की आयतः

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ج (سورۂ نساء آیت: ۱۴۵)

इन्नल् मुनाफ़िक़ी-न फ़िद्-दरकिल अस्फ़लि मिनन्-नारि॰

—सूरः निसा, आयत 145

'बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबके में जाएंगे' से भी यही बात मालूम होती है कि जहन्नम के कई तबके हैं। बुज़ुर्गों ने इन तबक़ों के नाम और इन तबक़ों वालों की तफ़्सील इस तरह बताई है कि सबसे नीचे का तब्क़ा, मुनाफ़िक़ों, फ़िऔन और उसके मददगारों का है, जिसका नाम 'हाविया' है और दूसरा तबक़ा जो हाविया के ऊपर है, मुश्रिकों के लिए है, जिसका नाम 'जहीम' है। फिर जहीम के ऊपर तीसरा तब्क़ा 'सक़र' जो बे-दीन फ़िर्क़ा 'साबिईन' के लिए है। चौथा तब्क़ा जो सक़र से ऊपर है 'लज़ा' है, वह इब्लीस और उसके ताबेदारों के लिए है और उसके ऊपर पांचवां तबक़ा यहूद के लिए है, जिसका नाम 'हुतमा' है और छठा तबक़ा 'सईर' है जो ईसाइयों के लिए है और सबसे ऊपर सातवां तबक़ा जहन्नम है जो गुनाहगार मुसलमानों के लिए है, उसी पर पुल सिरात क़ायम होगा और गो सब तबक़ों के लिए लफ़्ज़-ए-'जहन्नम' आया है लेकिन असल में इसी एक तबक़े का नाम जहन्नम है। यह भी लिखा है कि जहन्नम के तबक़ों के हर दरवाज़े से दूसरे

दरवाज़े तक सात सौ वर्ष की दूरी है।

दोज़ख़ की ख़ास गरदन

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन दोज़ख़ से एक गरदन निकलेगी, जिसकी दो आँखें होंगी और दो कान होंगे, जिनसे सुनती होगी और एक ज़बान होगी जिससे बोलती होगी, वह कहेगी, मैं तीन शख़्सों पर मुसल्लत की गई हूं। (1) हर सरकश ज़िद्दी पर (2) हर उस शख़्स पर जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद ठहराया। (3) तस्वीर बनाने वाले पर। —तिर्मिज़ी

आग के सुतूनों में बन्द कर दिए जाएंगे

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَی الْاَفْـِٕدَةِ ؕ اِنَّهَا عَلَیْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

नारुल्लाहिल मू-क़-द-तुल्लती तत्-त-लिअु अ़लल अफ़्इदति० इन्-न-हा अलैहिम मू-स-द-तुन० फ़ी अ-म-दिम् मुमद्-द-दतिन० —सूरः हुमज़ा, आयत 6-9

'(हुतमा) सुलगाई हुई अल्लाह की वह आग है, जो दिलों तक जा पहुंचेगी, वह आग उन पर लम्बे-लम्बे सुतूनों में बन्द कर दी जाएगी।'

दुनिया में किसी को आग लगती है तो दिल तक पहुंचने से पहले ही उसकी रूह निकल जाती है, लेकिन दोज़ख़ में मौत ही न आएगी इसलिए सारे बदन के साथ दिलों पर भी आग चढ़ी बैठी होगी और ख़ूब जलाएगी, आग बन्द कर दी जाएगी यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भर कर आग से दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे, क्योंकि उसमें उनको हमेशा रहना होगा। निकलना तो नसीब ही न होगा। लम्बे-लम्बे सुतूनों का मतलब यह है कि आग के इतने-इतने बड़े शोले होंगे जैसे सुतून होते हैं और दोज़ख़ी उसमें बन्द होंगे। —बयानुल क़ुरआन

दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तादाद

अलैहा तिस्-अ-त-अ-शर० عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝

'दोज़ख़ पर उन्नीस (19) फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे।' —सूरः मुद्दस्सिरः30

फ़ायदा:— इन उन्नीस में से एक मालिक है और बाक़ी ख़ाज़िन हैं और दोज़ख़ियों को सज़ा देने के लिए उनमें का एक फ़रिश्ता भी काफ़ी है, मगर तरह-तरह के अज़ाब देने और अज़ाब के इन्तिज़ाम के लिए 19 फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जिनके मुताल्लिक़ सूरः तह्रीम में है:

عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝

अलैहा मलाइकतुन ग़िलाज़ुन शिदादुल्-ला यअ्-सूनल्ला-ह मा अ-म-र-हुम व यफ़्-अलू-न मा युअ्-म-रून० **—सूरः तह्रीम, 6**

'उस (दोज़ख़) पर सख़्त और मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैंजो अल्लाह की (ज़रा) नाफ़रमानी उसके हुक्म में नहीं करते और जो हुक्म होता है वही करते हैं।'

'बयानुल क़ुरआन' में दुर्रे मंसूर' से नक़ल किया है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर मुक़र्रर किए हुए फ़रिश्तों में से हर एक की तमाम जिन्नों व इन्सानों के बराबर ताक़त है।

दोज़ख़ का ग़ैज़ व ग़ज़ब, चीख़ना चिल्लाना और दोज़ख़ियों को आवाज़ देकर बुलाना और दोज़ख़ियों का तंग जगहों में डाला जाना

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا
سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ (سورۂ ملک ۸-۶)

व लिल्लज़ी-न क-फ़-रू बिरब्बिहिम अज़ाबु जहन्-न-म व बिअ्सल मसीरू० इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअू ल-हा शहीक़ंव्-व हि-य तफ़ूरु० तकादु तमय्यज़ु मिनल ग़ैज़ि. **—सूरः मुल्क, आयत 6-8**

'और जो लोग अपने रब का इन्कार करते हैं उनके लिए दोज़ख़

का अज़ाब है और वह बुरी जगह है। जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी एक बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह इस तरह जोश मारता होगा जैसे अभी गुस्से की वजह से फट पड़ेगा।'

हज़रत हकीमुल उम्मत कुद्दस सिर्रहू 'बयानुल कुरआन' में लिखते हैं कि या तो अल्लाह तआला उसमें समझ[1] और गुस्सा पैदा कर देगा। हक़ का ग़ज़ब जिन पर हुआ है, उन पर उसको भी गुस्सा आएगा और या मिसाल देकर समझाना मक़सूद है कि ऐसा मालूम होगा जैसे दोज़ख़ को गुस्सा आ रहा है।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوا
مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝ (سورۃ فرقان ١٢-١٣)

इज़ा र-अतहुम मिम्-मकानिम-बईदिन समिअू लहा तग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा० व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन ज़य्यिक़म्-मुक़र्र-रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा०
—सूरः फ़ुर्क़ान 12-13

'जब वह (दोज़ख़) उनको दूर से देखेगा तो (वह देखते ही इतना ग़ज़बनाक होकर जोश मारेगा कि) वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे और जब वे उसकी किसी तंग जगह में हाथ-पांव बाँध कर डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे।'

फ़ायदाः— अभी जहन्नम दोज़ख़ियों से सौ साल के फ़ासले पर होगा कि उसकी नज़रें उन पर पड़ेंगी और उनकी नज़रें उस पर पड़ेंगी। वह देखते ही पेच व ताव खाएगा और जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगा, जिनको वे सुन लेंगे और जब उसमें धकेल दिए जाएंगे तो मौत को पुकारेंगे यानी जैसे दुनिया में किसी मुसीबत के वक़्त कहते हैं, हाए मर गए।

इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'इज़ा र-अतहुम' को पढ़कर दोज़ख़ की दो आँखें

1. दूसरी बहुत सी रिवायतों से भी मालूम होता है कि दोज़ख़ और जन्नत को अल्लाह पाक समझ दे देंगे। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

साबित फ़रमाई। —इब्ने कसीर

अगरचे दोज़ख़ बहुत बड़ी जगह है, लेकिन अज़ाब के लिए दोज़ख़ियों को तंग-तंग जगहों में रखा जाएगा। कुछ रिवायतों में ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसकी तफ़्सीर नक़ल की गई है कि जिस तरह दीवार में कील गाड़ी जाती है, उसी तरह दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में ठूंसा जाएगा। —इब्ने कसीर

تدعوا من ادبر وتولى ۝ وجمع فاوعى ۝ (سورۃ معارج ۱۷-۱۸)

तद्‌ऊ मन अद्‌-ब-र व त-वल्ला० व ज-म-अ फ़-औआ० —सूरः मआरिज 17-18

'दोज़ख़ उस शख़्स को (ख़ुद) बुलाएगा, जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (इताअत से) बे-रुख़ी की होगी और (माल) जमा किया होगा फिर उठा-उठा रखा होगा।'

इब्ने कसीर में है कि जिस तरह जानवर दाना ढूंढ कर चुगता है उसी तरह दोज़ख़ हश्र के मैदान से बुरे लोगों को एक-एक करके देख-भाल के चुन लेगा। इस आयत में माल जमा करने वालों का ज़िक्र है। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु इसकी तफ़्सीर में फ़रमाते थे कि जिसने जमा करने में हलाल व हराम का ख़्याल न रखा और ख़ुदा के फ़रमान के बावुजूद ख़र्च न करता था, वह शख़्स मुराद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हकीम इस आयत के डर की वजह से कभी थैली का मुंह ही बंद न करते थे। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि ऐ इब्ने आदम! तू ख़ुदा का डरावा सुनता है और फिर माल समेटता है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

'क़ियामत के दिन इन्सान को बकरी की तरह (यानी ज़िल्लत की हालत में) लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर दिया जाएगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उससे फ़रमाएंगे, क्या मैंने तुझको माल नहीं दिया, मवेशी और ग़ुलाम व ख़ादिम नहीं दिए, तुझ पर इनामात नहीं किए? बता तूने (उसके शुक्रिए में) क्या किया? इस पर वह जवाब देगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने जमा किया और ख़ूब बढ़ाया और जितना था उससे

कहीं ज़्यादा छोड़ा, तू मुझे इजाज़त दीजिए कि उस सबको ले आऊं। ग़रज़ यह कि वह बंदा ऐसा होगा कि उसने कुछ ख़ैर आगे न भेजी होगी इसलिए उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी

और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है, जिसका कोई घर नहीं है और उसका माल है जिसका कोई माल नहीं है और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास कुछ भी अक़्ल न हो।

—मिश्कात शरीफ़

बेहक़ी ने शोबुल ईमान में मर्फ़ू[1] हदीस नक़ल की है कि जब मरने वाला मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि उसने आख़िरत में क्या भेजा है और इन्सान कहते हैं कि उसने दुनिया में क्या छोड़ा है?

दोज़ख़ की बागें (लगामें) और उनके खींचने वाले फ़रिश्ते

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन दोज़ख़ को लाया जाएगा, जिसकी सत्तर हज़ार बागें होंगी और हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो उसको खींच रहे होंगे। —मुस्लिम शरीफ़

हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़ मुन्ज़िरी रह० ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि मान लीजिए अगर उस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख़ की बागें छोड़ दें तो दोज़ख़ हर नेक व बद को अपने घेरे में ले ले।

दोज़ख़ के सांप और बिच्छू

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक दोज़ख़ में बड़ी लम्बी गरदनों वाले ऊंटों की बराबर सांप हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक सांप डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (फिर फ़रमाया) और बेशक दोज़ख़ में पालान से लदे हुए ख़च्चर की

1. ऐसी हदीस जिसके सब रावी मोतबर (सच्चे) हों और कहीं कोई रावी छूटता न हो।

नगर बिच्छू हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक बिच्छू डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। —अहमद

क़ुरआन शरीफ़ में है:

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ○ (سورۂ نحل آیت ۸۸)

ज़िद्नाहुम अज़ाबन फ़ौक़ल अज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून०

—सूरः नहल, आयत 88

'यानी हम उनके लिए अज़ाब पर अज़ाब बढ़ा देंगे, उस शरारत के बदले जो वे करते थे।'

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि आग के आम अज़ाब के अलावा उनके लिए यह अज़ाब बढ़ा दिया जाएगा कि उन पर बिच्छू मुसल्लत किए जाएंगे, जिनके कीले (बड़े दांत) लम्बी-लम्बी खजूरों के बराबर होंगे। —तर्ग़ीब

दोज़ख़ में मौत न आएगी और अज़ाब हल्का न होगा

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है:

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ○

ला युफत्तरु अन्हुम व हुम फ़ीहि मुब्लिसून० **—सूरः ज़ुख़रुफ़, आयत 75**

'उनका अज़ाब हल्का न किया जाएगा और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे।'

दूसरी जगह इर्शाद है:

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ط (سورۂ فاطر ۳۶)

ला युक्ज़ा अलैहिम फ़-यमूतू व ला युख़फ़्-फ़-फ़ु अन्हुम-मिन अज़ाबिहा,

—सूरः फ़ातिर, 36

'न तो उनकी क़ज़ा (मौत) आएगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़

का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा।'

यानी दोज़ख़ में यह भी नहीं हो सकता कि अज़ाब में पड़े-पड़े मौत ही आ जाए और अज़ाब से बच जाएं, बल्कि वहां वे इन्तिहा तक्लीफ़ होने पर भी ज़िंदा रहेंगे। हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में जा चुकेंगे (और दोज़ख़ से कोई जन्नत में जाने वाला बाक़ी न रहेगा) तो दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान (मेंढे की सूरत में) मौत लाई जाएगी। इसके बाद एक पुकारने वाला पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! अब मौत न आएगी और ऐ दोज़ख़ वालो! अब मौत न आएगी। इस ऐलान के सुनने से जन्नत वालों की ख़ुशी में बढ़ोतरी होगी और दोज़ख़ वालों का रंज और बढ़ जाएगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ की आवाज़ 'हल मिम-मज़ीद'

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝ (سورۂ ق:۳۰)

यौ-म नक़ूलु लि-ज-हन्-न-म हलिम-त-लअ्ति व तक़ूलु हल मिम्-मज़ीद॰

—सूरः क़ाफ़, 30

'जिस दिन हम कहेंगे दोज़ख़ से, क्या तू भर चुकी? वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है?' (तर्जुमा शैख़ुल हिंद रह॰)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जहन्नम में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ 'हल मिम-मज़ीद' (क्या और भी है?) कहता जाएगा और सब दोज़ख़ी दाख़िल हो जाएंगे, जब भी न भरेगा यहां तक कि अल्लाह तआला उस पर अपना क़दम शरीफ़ रख देंगे जिसकी वजह से दोज़ख़ सिमट जाएगा और यों अर्ज़ करेगा— "**क़त क़त बिइज़्ज़ति-क व क-र-मि-क**" (बस, बस आप की इज़्ज़त और करम का वास्ता देता हूं।) —मिश्कात

सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी

दुनिया में दस्तूर है कि सब्र करने से मुसीबत के बाद राहत नसीब

हो जाती है मगर दोज़ख़ के अज़ाब के बारे में इर्शाद है:

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۖ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ (سورۂ طور،آیت ۱۶)

इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू, सवाउन अलैकुम, इन्-न-मा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम तअ्-म-लून० —सूरः तूर, आयत 16

'दोज़ख़ियों से कहा जाएगा, इसमें दाख़िल हो जाओ, फिर सब्र करो या न करो, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं, जैसा कि तुम करते थे, वैसा ही तुम्हें बदला दिया जाएगा।'

दोज़ख़ियों का खाना-पीना

ज़री यानी आग के कांटे:—

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ○ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ○ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ○

तुस्क़ा मिन ऐनिन आनियतिन० लै-स लहुम तआमुन इल्ला मिन ज़रीइन्० ला युस्मिनु व ला युग्नी मिन जूअ्० (सूरः ग़ाशियह, आयत 5-7)

'दोज़ख़ियों को खौलते हुए चश्मे का पानी मिलेगा और सिवाए झाड़-कांटों वाले खाने के इनके लिए कुछ खाना न होगा, जो न ताक़त देगा और न भूख दूर करेगा।'

साहिबे 'मिर्क़ात' लिखते हैं कि 'ज़री' हिजाज़ में एक कांटेदार पेड़ का नाम है, जिसकी ख़बासत (गंदगी) की वजह से जानवर भी पास नहीं फटकते। अगर जानवर उसको खा ले तो मर जाए। फिर लिखते हैं, यहां 'ज़री' से आग के कांटे-मुराद हैं जो एलवे से कड़वे, मुर्दे से ज़्यादा बदबूदार और आग से ज़्यादा गर्म होंगे और जिनको बहुत ज़्यादा खाने के बाद भी भूख दूर न होगी।

ग़िस्लीन (घावों का धोवन)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝ لَّا يَاْكُلُهٗ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ۝ (سورۃ الحاقۃ، ۳۵-۳۷)

फ़लै-स लहुल यौ-म हाहुना हमीमुंव० वला तआमुन इल्ला मिन ग़िस्लीन० ला यअ्कुलुहू इल्लल्ख़ातिऊन० —सूरः हाक़्क़ा, 35-37

'आज इसका कोई दोस्त नहीं और न कुछ खाने को ही है सिवाए घावों के धोवन के जिसे सिर्फ़ गुनाहगार खाते हैं।'

ज़क़्क़ूम (सेंढ)

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۝ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ۝ (سورۃ دخان، آیت ۴۳-۴۶)

इन्-न श-ज-र-तज़्ज़क़्क़ूमि० तआमुल असीम० कल्मुह्लि, यग़्ली फ़िल बुतूनि० क-ग़ल्यिल हमीम० —सूरः दुख़ान, 43-46

'बेशक गुनाहगार का खाना पिघले हुए तांबे जैसा ज़क़्क़ूम का पेड़ है जो पेटों में गर्म पानी की तरह खौलेगा।'

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۝ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۝ فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۝ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۝ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ (سورۃ واقعہ، ۵۱-۵۶)

सुम्-म इन्-न-कुम अय्युहज़्ज़ाल्लूनल-मुकज़्ज़िबून० ल-आकिलू-न मिन श-ज-रिम मिन ज़क़्क़ूमिन० फ़-मालिऊ-न-मिन-हल बुतून० फ़-शारिबू-न अ़लैहि मिनल हमीमि० फ़-शारिबू-न शुर्बलहीमि० हाज़ा नुज़ुलुहुम यौमद्दीनि० —सूरः वाक़िआ 51-56

'फिर ऐ झुठलाने वाले-गुमराह लोगो! तुम ज़क़्क़ूम के पेड़ से खाओगे और उससे अपने पेट भर लोगे, फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पियोगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, क़ियामत के दिन इस तरह उनकी मेहमानी होगी।'

انها شجرة تخرج فی اصل الجحیم ٥ طلعها کانه رءوس الشیطین ٥

इन्न-न-हा श-ज-र-तुन तख़्रुजु फ़ी अस्लिल जहीमि० तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्शयातीनि०

—सूरः साफ़्फ़ात, 64-65

'असल में वह (ज़क़्क़ूम) एक पेड़ है जो दोज़ख़ की जड़ में से निकलता है। इसके फल ऐसे हैं जैसे सांपों के फन।'

फ़ायदाः— ज़क़्क़ूम का तर्जुमा सेंढ किया जाता है जो मशहूर कड़वा पेड़ है। लेकिन यह सिर्फ़ समझाने के लिए है, क्योंकि वहां की हर चीज़ कड़वाहट और बदबू वग़ैरह में यहां की चीज़ों से कहीं ज़्यादा बुरी है और क्या ही बुरा मंज़र होगा जबकि उस पेड़ से खाएंगे और फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पिएंगे और वह भी थोड़ा बहुत नहीं, बल्कि प्यासे ऊंटों की तरह ख़ूब ही पिएंगे।

اعاذنا اللہ تعالی من الزقوم والحمیم وسائر انواع عذاب الجحیم

अ-आ-ज़ नल्लाहु तआला मिनज़्-ज़क़्क़ूमि वल हमीमि व साइरि अन्वाअि अज़ाबिल जहीमि।

"अल्लाह तआला हमें ज़क़्क़ूम, हमीम और दोज़ख़ के अज़ाब की तमाम क़िस्मों से बचाए रखे।"

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा (बूंद) भी दुनिया में टपका दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर तमाम दुनिया वालों के खाने बिगाड़ डाले (यानी सब कड़वे हो जाएं) अब बताओ कि उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा। —तिर्मिज़ी व इब्ने हिब्बान वग़ैरह

हाकिम की रिवायत में है कि ख़ुदा की क़सम! अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के दरियाओं में डाल दिया जाए तो वह यक़ीनन तमाम दुनिया वालों की ग़िज़ाएं कड़वी कर दे, तो बताओ उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा। —तर्ग़ीब

ग़स्साक़ (पीप)

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۙ إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ۙ (سورہ نبا:۲۵-۲۴)

ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बरदंव्-व ला शराबन॰ इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साक़ा॰

—सूरः नबा 24-25

'वे उस दोज़ख़ में खौलते हुए पानी और ग़स्साक़ के अलावा किसी ठंडक और पीने की चीज़ का मज़ा तक न चख सकेंगे।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अगर ग़स्साक़ (पीप) का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए, तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएं। —तिर्मिज़ी व हाकिम

ग़स्साक़ क्या चीज़ है?

इसके बारे में उम्मत के बुज़ुर्गों के अलग-अलग क़ौल हैं। साहिबे मिर्क़ात ने चार क़ौल नक़ल किए हैं।

1. दोज़ख़ियों के पीप और उनका धोवन है।
2. दोज़ख़ियों के आंसू मुराद हैं।
3. "ज़म्हरीर" यानी दोज़ख़ का ठंडक वाला अज़ाब मुराद है।
4. ग़स्साक़ सड़ी हुई और ठंडी पीप है जो ठंडक की वजह से पी न जा सकेगी (मगर भूख की वजह से मजबूरन पीनी पड़ेगी) बहरहाल ग़स्साक़ बड़ी बुरी चीज़ है।

अल्लाहुम्-म अ-इज़्ना मिन्हु

"ऐ अल्लाह हमें इस से बचाए रखना।"

माइन कल् मुह्लि (कीट)

وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۚ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ (سورۃ الکہف:۲۹)

व इंय्-यस्-त-ग़ीसू युग़ासू बिमाइन कल् मुह्लि यश्विल वुजूह, बिअ्सश्-

शराबु व साअत मुर-त-फ़-क़ा。 —सूरः कह्फ़:29

'और अगर प्यास से तड़प कर फ़रियाद करेंगे तो उनको ऐसा पानी दिया जाएगा जो तेल की तलछट (कीट) की तरह होगा, जो चेहरों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और दोज़ख़ क्या ही बुरी जगह है?'

माइन सदीद (पीप का पानी)

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ۝ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ
مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ط (سورۂ ابراہیم:۱۶-۱۷)

व युस्क़ा मिम माइन सदीद० य-त-जर्-र-अुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व बिमय्यितिन०

—सूरः इब्राहीमः 16-17

'इस (दोज़ख़ी) को पीप का वह पानी पिलाया जाएगा, जिसको वह घूंट-घूंट करके पिएगा और उसको गले से मुश्किल से उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत (आती हुई) नज़र आएगी, मगर वह मरेगा नहीं।'

यानी हर तरफ़ से तरह-तरह के अज़ाब देखकर समझेगा कि अब मैं मरा, अब मरा, मगर वहां मौत न होगी कि मरकर ही पाप कट जाए और अज़ाब से रिहाई हो सके।

माअन हमीमन (खौलता हुआ पानी)

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ۝

व सुक़ू माअन हमीमन फ़-क़त्-त-अ़ अम्-आ-अ-हुम。 —सूरः मुहम्मदः15

'और दोज़ख़ियों को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।'

तआमन ज़ा ग़ुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا۝ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا۝

इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमंव्० व तआमन ज़ा गुस्सतिंव्-व अज़ाबन अलीमा० —सूरः मुज़्ज़म्मिलः12-13

'बेशक (इन काफ़िरों के लिए) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढेर और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते थे कि *'तआमन ज़ा गुस्सतिन'* एक कांटा होगा जो गले में अटक जाएगा, न बाहर निकलेगा, न नीचे उतरेगा। —तर्ग़ीब

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत फ़रमाते हैं कि आपने फ़रमाया, दोज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूख लगा दी जाएगी जो अकेली ही उस अज़ाब के बराबर होगी जो उनको भूख के अलावा हो रहा होगा, इसलिए वे खाने के लिए फ़रियाद करेंगे इस पर उनको ज़री (आग के कांटे) का खाना दिया जाएगा, जो न मोटा करे, न भूख दूर करे, फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उनको *'तआमन ज़ा गुस्सतिन'* (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा, उसके उतारने के लिए उपाय सोचेंगे तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों से गले की अटकी हुई चीज़ें उतारा करते थे इसलिए पीने की चीज़ को मांगेंगे, खौलता हुआ पानी लोहे की संडासियों के ज़रिए उनके सामने कर दिया जाएगा, वे संडासियां जब उनके चेहरों के क़रीब होंगी तो उनके चेहरों को भून डालेंगी फिर जब पानी पेटों में पहुंचेगा तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आंतों वग़ैरह) के टुकड़े- टुकड़े कर डालेगा। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने *'युस्क़ा मिम माइन सदीदिंय्-य-त-जर्र-अु-हू'* पढ़कर फ़रमाया, *'माइन सदीद'* (पीप का पानी) जब दोज़ख़ी के मुंह के क़रीब किया जाएगा तो वह उससे नफ़रत करेगा फिर और क़रीब किया जाएगा तो चेहरे को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी। फिर जब उसे पिएगा तो अंतड़ियां काट डालेगा यहाँ तक कि पाख़ाने की जगह से बाहर निकल जाएगा।

अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े

दोज़ख़ की आग और उसकी सख़्त गर्मी, सांप, बिच्छू, खाने-पीने की चीज़ें, अंधेरा यह सब कुछ अज़ाब ही अज़ाब होगा, मगर यह जो कुछ अब तक ज़िक्र किया गया, दोज़ख़ के अज़ाब का थोड़ा-सा हिस्सा है, क़ुरआन व हदीस से मालूम होता है कि इन तरीक़ों के अलावा और भी बहुत से तरीक़ों से अज़ाब दिया जाएगा, जिनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं।

सेह (गर्म पानी) सर पर डाला जाएगा

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۝ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۝

युसब्बु मिन फ़ौक़ि रूऊसिहिमुल हमीमु० युस्हरू बिही मा फ़ी बुतूनिहिम वल् जुलूद० —सूरः हज:19-20

'उनके सरों पर जलता-जलता पानी डाला जाएगा, जिसकी तेज़ी से उनके पेट में से और खाल में से सब कुछ गलकर बाहर निकल आएगा।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, बेशक खौलता हुआ पानी ज़रूर दोज़ख़ियों के सरों पर डाला जाएगा जो उनके पेटों में पहुंच कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उनके पेटों के अन्दर हैं और आख़िर में क़दमों से निकल जाएगा। इसके बाद फिर दोज़ख़ी को वैसा ही कर दिया जाएगा जैसा था, फिर इर्शाद फ़रमाया कि आयत में जो लफ़्ज़ 'युस्हरू' है उसका यही मतलब है।

—तिर्मिज़ी, बैहक़ी

मक़ामिअ़ (गुर्ज़)

وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ۝ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

व लहुम मक़ामिअ़ मिन हदीद० कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन ग़म्मिन उईदू फ़ीहा व ज़ूक़ू अज़ाबल हरीक़० —सूरः हज:21-22

"और दोज़ख़ियों (के मारने) के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। वे लोग जब भी दोज़ख़ की घुटन से निकलना चाहेंगे, फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का अज़ाब चखते रहो।"

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि, (दोज़ख़ के) लोहे का एक गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए, तो अगर उसको तमाम जिन्न और इन्सान मिलकर उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते।

—अहमद, अबूयाला

और एक रिवायत में है कि जहन्नम का लोहे का गुर्ज़ अगर पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर रेज़ा-रेज़ा[1] होकर राख हो जाएगा।

—तर्ग़ीब

खाल पलट दी जाएगी

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ط (نساء ٥٦)

कुल्लमा नज़ि-जत जुलूदुहुम बद्दलनाहुम जुलूदन ग़ैरहा लियज़ूक़ुल अज़ाब.

—सूरः निसा:56

जब एक बार उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उसकी जगह दूसरी नई खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब चखते ही रहें।'

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से नक़ल किया गया है कि दोज़ख़ियों को हर दिन सत्तर हज़ार बार आग जलाएगी। हर बार जब आग जलाएगी तो कहा जाएगा, जैसे थे, वैसे ही हो जाओ। तो वे हर बार वैसे ही हो जाएंगे।

—तर्ग़ीब व तर्हीब

अलग-अलग सज़ाएं

इल्म छिपाने वाले की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिससे कोई इल्म

---

1. कण-कण।

की बात पूछी गई और उसने जानते हुए (न बताई बल्कि) उसको छिपा लिया तो उसके मुंह में आग की लगाम लगाई जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

शराब या नशे वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मेरे रब ने क़सम खाई है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है, मेरे बन्दों में से जो भी बन्दा शराब का कोई घूंट पिएगा तो उसको इतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा, उसको पाक-साफ़ हौज़ों से पिलाऊंगा।
—अहमद

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा ने अपने ज़िम्मे यह अ़हद कर लिया है कि जो कोई नशेदार चीज़ पिएगा, क़ियामत के दिन ज़रूर उसको *'तीनतुल ख़बाल'* में से पिलाएगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया *'तीनतुल ख़बाल'* क्या है? इर्शाद फ़रमाया, दोज़ख़ियों का पसीना या फ़रमाया, दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़। —मिश्कात

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिसकी आ़दत शराब पीने की थी और वह इसी हाल में मर गया तो अल्लाह तआ़ला उसको *'नहरूल ग़ोता'* से पिलाएंगे। अर्ज़ किया गया *'नहरूल ग़ोता'* क्या है? इर्शाद फ़रमाया, एक नहर है जो ज़िना कराने वाली औ़रतों की शर्मगाहों से जारी होगी।
—अहमद व इब्ने हिब्बान

बे-अ़मल वाइज़ों की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस रात मुझको मेराज कराई गई, मैंने ऐसे लोग देखे, जिनके होंठ आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे। मैंने पूछा, ऐ जिब्रील! ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, ये आपकी उम्मत के वे वाइज़[1] हैं, जो लोगों को भलाई का हुक्म करते हैं और अपने आप को भूल जाते हैं और अल्लाह की

1. वाज़ व नसीहत करने वाले, अच्छी बातें बताने वाले।

किताब पढ़ते हैं, लेकिन अ़मल नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा, फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा, उसकी अंतड़ियां आग में जल्दी से निकल पड़ेंगी, फिर वह उसमें इस तरह घूमेगा जिस तरह गधा चक्की को लेकर घूमता है। उसका हाल देखकर दोज़ख़ी उसके पास जमा हो जाएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ फ़्लां! तुझे क्या हुआ है? क्या तू हमको भलाई का हुक्म न करता था और बुराई से न रोकता था, वह कहेगा, हां, तुम को भलाई का हुक्म करता था मगर ख़ुद न करता था और तुम को बुराई से रोकता था, मगर उसको ख़ुद करता था।

सोने-चांदी के बरतन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने सोने या चांदी के बरतन में या किसी ऐसे बरतन में कुछ खाया पिया, जिसमें सोने या चांदी का हिस्सा हो, वह अपने पेट में दोज़ख़ की आग भरता है। —दारे क़ुत्नी

फ़ोटो ग्राफ़र की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब तस्वीर (फ़ोटो) बनाने वालों को होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

और इर्शाद फ़रमाया है कि हर तस्वीर बनाने वाला दोज़ख़ में होगा, उसकी बनाई हुई हर तस्वीर के बदले एक जान बना दी जाएगी जो उसको दोज़ख़ में अज़ाब देगी। —बुख़ारी व मुस्लिम

इस रिवायत के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमायाः अगर तुझे बनानी ही हो तो पेड़ और बे-जान चीज़ की तस्वीर बना ले।

—मिश्कात शरीफ़

ख़ुदकुशी[1] करने वाले की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने पहाड़ से गिरकर ख़ुदकुशी कर ली तो वह दोज़ख़ की आग में होगा, उसमें हमेशा-हमेशा[2] (चढ़ता और गिरता) रहेगा और जिसने ज़हर पीकर ख़ुदकुशी कर ली तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा, जिसको दोज़ख़ की आग में हमेशा-हमेशा पीता रहेगा और जिसने किसी लोहे की चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसकी वह लोहे की चीज़ उसके हाथ में होगी जिस को हमेशा-हमेशा दोज़ख़ की आग में अपने पेट में घोंपता रहेगा।

—बुख़ारी

घमंडी की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, घमंड करने वाले चियूंटियों के बराबर जिस्मों में उठाए जाएंगे, जिनकी शक्लें इन्सानों की होंगी। फिर फ़रमाया, हर तरफ़ से उनको ज़िल्लत घेर लेगी। (फिर फ़रमाया) वे दोज़ख़ के जेलख़ाने की तरफ़ इसी तरह हंकाए जाएंगे। इस जेलख़ाने का नाम बोलस है। उन पर आगों को जलाने वाली आग चढ़ी होगी और उनको *'तीनतुल ख़बाल'* यानी दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़ पिलाया जाएगा। —मिश्कात शरीफ़

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस को 'हब हब' कहा जाता है उसमें हर जब्बार (सरकश) रहेगा।

दिखावटी आबिदों की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जुब्बुल हुज़्न (ग़म के कुंए) से पनाह मांगो। सहाबा रज़ि. ने अर्ज़ किया कि जुब्बुल हुज़्न क्या है? इर्शाद फ़रमाया दोज़ख़ में एक गढ़ा है, जिससे हर दिन ख़ुद दोज़ख़ 400 बार पनाह चाहता है। अर्ज़ किया गया, उसमें कौन जाएगा?

1. आत्म-हत्या, अपने आप को ख़ुद ख़त्म कर लेना।
2. यह काफ़िर के बारे में है। मुसलमान ख़ुदकुशी करने वाला, ख़ुदकुशी की सज़ा पूरी कर लेने के बाद दूसरे गुनाहगार मुसलमानों की तरह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

फ़रमाया, अपने आमाल का दिखलावा करने वाले आबिद (इबादत करने वाले) जाएंगे। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इब्ने माजा की रिवायत में यह भी है कि इसके बाद आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के नज़दीक सबसे बद-तरीन इबादत गुज़ारों में वे भी हैं जो (ज़ालिम) अमीरों (सरदारों) के पास जाते हैं यानी उनकी ख़ुशामद और चापलोसी के लिए। —मिश्कात शरीफ़

सऊ़द (आग का एक पहाड़)

क़ुरआन शरीफ़ में है:-

سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا۝

स-उर्हिक़ुहू सऊ़दन०

'बहुत जल्द मैं उसको सऊ़द पर चढ़ाऊंगा (जो दोज़ख़ में आग का पहाड़ है)' —सूरः मुद्दस्सिर:17

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि 'सऊ़द' आग का एक पहाड़ है, जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा, फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जाएगा यानी 70 साल तक वह ऊपर चढ़ा था, अब 70 साल तक गिरते-गिरते नीचे पहुंचेगा और हमेशा उसके साथ ऐसा ही होता रहेगा। —तिर्मिज़ी

सिलसिला (बहुत लंबी ज़ंजीर)

क़ुरआन शरीफ़ में है:-

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ۝ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ۝ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ۝

ख़ुज़ूहु फ़-ग़ुल्लूहु० सुम्-मल जही-म सल्लूहु० सुम्-म फ़ी सिलसि-ल-तिन ज़र्उ़हा सब्-ऊ-न ज़िराअ़न फ़स्लुकूहु० —सूरः हाक़्क़ा:30-32

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) इसको पकड़ो फिर इसको तौक़ पहना दो, फिर दोज़ख़ में दाख़िल कर दो, फिर ऐसी ज़ंजीर में

जकड़ दो जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़द्दस सिर्रहू 'बयानुल क़ुरआन' में लिखते हैं कि उस गज़ की मिक़्दार ख़ुदा को मालूम है, क्योंकि यह गज़ वहां का होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अगर रांग का एक टुकड़ा ज़मीन की तरफ़ आसमान से छोड़ दिया जाए तो रात के आने से पहले ज़मीन तक पहुंच जाए जो पांच सौ साल की दूरी है और अगर वह टुकड़ा दोज़ख़ी की ज़ंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो दूसरे तक पहुंचने से पहले चालीस साल तक चलता रहेगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इससे मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के जकड़ने की ज़ंजीरें आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी से भी लंबी होंगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि ये ज़ंजीरें उसके जिस्म में पिरो दी जाएंगी, पाख़ाने के रास्ते से डाली जाएंगी, फिर उसे आग में इस तरह भूना जाएगा जैसे सीख़ में कबाब और तेल में टिड्डी भूनी जाती है। —इब्ने कसीर

तौक़

अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:—

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۟ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ۝ (سورة الدهر، آيت ۴)

इन्-ना अअ्तद्-ना लिल काफ़िरी-न सला-सि-ल व अग़्लालंव्-व सअ़ीरा०

—सूरः दह्र:4

'हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है।'

सूरः मोमिन में है:

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ إِذِ الْأَغْلَٰلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَٰسِلُ يُسْحَبُونَ ۝
فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝

फ़-सौ-फ़ यअ्-ल-मू-न० इज़िल अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम वस्सलासिलु, युस्हबू- न० फ़िल हमीमि सुम्-म फ़िन्-नारि युस्-ज-रून० —सूरः मोमिन, 70-72

'उनको अभी मालूम हो जाएगा, जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और (उन तौक़ों में) ज़ंजीरें (पिरोई हुई होंगी और इस तरह से) घसीटते हुए गर्म पानी में ले जाए जाएंगे, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे।'

इब्ने अबी हातिम की एक मर्फ़ू हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे दोज़ख़ी देखेंगे, उनसे पूछा जाएगा, तुम क्या चाहते हो? वह दुनिया पर क़ियास करके (अन्दाज़ा करके) कहेंगे, हम यह चाहते हैं कि बादल बरसे! उसमें से तौक़ और ज़ंजीरें और आग के अंगारे बरसने लगेंगे, जिनके शौले उन्हें जलाएंगे और उनके तौक़ों व ज़ंजीरों में और बढ़ोतरी हो जाएगी। —इब्ने कसीर

जिस खौलते पानी में दोज़ख़ी डाले जाएंगे, उसके मुताल्लिक़ हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि गुनाहगार के बाल पकड़ कर उस पानी में ग़ोता दिया जाएगा तो उसका तमाम गोश्त गलकर गिर जाएगा और हड्डियों के ढांचे और दो आँखों के सिवा कुछ न बचेगा।

गंधक के कपड़े

सूरः इब्राहीम में इर्शाद हैः—

سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ۙ

सराबीलुहुम मिन क़ति-रानिंव्-व तग़्शा वुजू-ह-हुमुन्नारु० —सूरः इब्राहीम, 50

'उनके कुरते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग लिपटी हुई होगी।'

फ़ायदाः— हज़रत हकीमुल उम्मत रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि चीड़ के तेल को क़तिरान कहते हैं (जिसका तर्जुमा गंधक किया गया है) और उसके कुरतों का मतलब यह है कि सारे बदन को क़तिरान लिपटी होगी ताकि उसमें जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।

—बयानुल क़ुरआन

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते थे कि 'क़तिरान' पिघले हुए तांबे

को कहते हैं। इस तांबे के दोज़ख़ियों के कपड़े होंगे जो सख़्त गर्म आग जैसे होंगे।

—इब्ने कसीर

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

मय्यित पर चीख़-पुकार करके रोने वाली औरत अगर मौत से पहले तौबा न करेगी तो क़ियामत के दिन इस हाल में खड़ी की जाएगी कि उस का एक कुरता क़तिरान (गंधक[1] या पिघले हुए तांबे) का होगा और एक खुजली का होगा, यानी उसके जिस्म पर ख़ारिश (खुजली) पैदा कर दी जाएगी और ऊपर से क़तिरान लपेट दिया जाएगा। सूरः हज: आयत 19 में इर्शाद है:

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ط

फ़ल्लज़ी-न क-फ़-रू क़ुत्ति-अत लहुम सियाबुम् मिन्-नारिन,

'सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के लिए) आग के कपड़े तराशे जाएंगे।'

दोज़ख़ के दारोग़ाओं के ताने

तरह-तरह की जिस्मानी तक्लीफ़ों और अलग-अलग क़िस्म के अज़ाब के तरीक़ों के अलावा एक बहुत बड़ी रूहानी तक्लीफ़ दोज़ख़ियों को यह पहुंचेगी कि दोज़ख़ के दारोग़ा उनको ताने देंगे, जिसको क़ुरआन हकीम में अलग-अलग अन्दाज़ से बयान किया गया है। सूरः अलिफ़-लाम-मीम-सज्दा में इर्शाद है:

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ○

व क़ी-ल लहुम ज़ूक़ू अज़ाबन्-नारिल्-लज़ी कुन्तुम बिही-तुकज़्ज़िबून०

—सूरः सज्दा, 20

1. अगर क़तिरान से मुराद गंधक ही है तो यह गंधक इसलिए न होगी कि उसकी खुजली को आराम हो जाए बल्कि इसलिए ताकि जिस्म पर और ज़्यादा जलन हो, क्योंकि खुजली में गंधक लगाने से बहुत जलन होती है। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

'और उनसे कहा जाएगा, अब चखो इस आग का अज़ाब, जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः अह्क़ाफ़ में है:

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا ج فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ○ (سورۃ احقاف:۲۰)

अज़्हब्तुम तय्यि-बातिकुम फ़ी हयातिकुमुद्दुन्या वस्-तम-तअ्-तुम बिहा, फ़ल-यौ-म तुज्ज़ौ-न अज़ाबल हूनि बिमा कुन्तुम तस्-तक्बिरू-न फ़िल अर्ज़ि बिग़ैरिल हक्क़ि व बिमा कुन्तुम तफ़्सुक़ून० —सूरः अह्क़ाफ़:20

'तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अपने मज़े पूरे कर लिए, उन्हें तो हासिल कर चुके (अब ज़रा संभल जाओ, क्योंकि) आज तुम ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा पाओगे, अपनी उस अकड़ के बदले कि तुम ख़ामख़ाह ज़मीन में बड़े बनते थे और ख़ुदा की ना-फ़र्मानी करते थे।'

हज़रत ज़ैद बिन असलम रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने पानी तलब फ़रमाया, आप की ख़िदमत में शहद में मिला हुआ पानी पेश किया गया, तो आप ने नहीं पिया और फ़रमाया यह है तो बहुत अच्छा, मगर नहीं पियूंगा क्योंकि मैं क़ुरआन शरीफ़ में पढ़ता हूं कि अल्लाह तआला ने ख़्वाहिशों पर अमल करने वालों की बुराई करते हुए फ़रमाया है कि उनसे आख़िरत में कहा जाएगा कि तुमने दुनिया की ज़िंदगी में मज़े उड़ाए, इसलिए मैं डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकी के बदले में दुनिया ही में लज़्ज़तें मिल जाएं। —मिश्कात

(2) दोज़ख़ियों के हालात

दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को ख़िताब करके फ़रमाएंगे, ऐ आदम! वह अर्ज़ करेंगे:

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ़्दैक वल ख़ैरू कुल्लुहू फ़ी यदैक

यानी, 'मैं हाज़िर हूं और हुक्म का ताबे हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है,' अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अ़र्ज़ करेंगे, दोज़ख़ी कितने हैं? इर्शाद होगा, हर हज़ार में से 999 हैं। यह सुनकर औलादे आदम को सख़्त परेशानी होगी और (रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग बद-हवास हो जाएंगे और हक़ीक़त में बेहोश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से बद-हवासी हो जाएगी)। —मिश्कात

यह सुनकर हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह एक जन्नती हम में से कौन-कौन होगा? आपने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) ख़ुश हो जाओ, क्योंकि यह तादाद इस तरह है कि एक तुम में से और हज़ार याजूज-माजूज हैं। —मिश्कात

मतलब यह है कि याजूज-माजूज की तादाद बहुत ज़्यादा है अगर तुम में और उनमें मुक़ाबला हो तो तुम में से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और वे भी आदम ही की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर हज़ार में से 999 दोज़ख़ में जाएंगे।

दोज़ख़ में ज़्यादा तर औरतें होंगी

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो अक्सर बे-पैसे वाले देखे और मैंने दोज़ख़ में नज़र डाली तो अक्सर औरतें देखीं। —मिश्कात

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार ईद या बक़रा ईद की नमाज़ के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में औरतों पर गुज़र हुआ तो आपने (उनको ख़िताब करके) फ़रमाया, ऐ औरतो! सदक़ा किया करो, क्योंकि मैंने दोज़ख़ियों में ज़्यादातर औरतें देखी हैं। औरतों ने अर्ज़ किया, क्यों? आपने फ़रमाया कि लानत[1] बहुत करती हो और शौहर की ना-शुक्री करती हो। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ियों की बद-सूरती

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا لا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ط مَا
لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ج كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ
مُظْلِمًا ط (سورۂ یونس: آیت ۲۷)

वल्लज़ी-न क-स-बुस्सय्यिआति ज-ज़ाउ सय्यिअतिम बिमिस्लिहा व तर्-हक़ु-हुम् ज़िल्लतुन, मा लहुम् मिनल्लाहि मिन आसिम, क-अन्-न-मा उग़्शियत वुजू-हु-हुम क़ि-त-अम मिनल्लैलि मुज़्लिमन० —सूरः यूनुसः27

'और जिन लोगों ने बुरे काम किए बदी की सज़ा उस बुराई के बराबर मिलेगी और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी, उनको अल्लाह (के अज़ाब) से कोई न बचा सकेगा (उनकी बद-सूरती का यह हाल होगा कि) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिए गए हैं।'

---

1. लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर होना। आपका मतलब यह था कि औरतें अक्सर दूसरी औरतों पर लानत करती रहती हैं, इस वजह से वे ख़ुद ही अल्लाह की रहमत से दूर होती रहती हैं और अल्लाह की रहमत से दूर होने का मतलब ही दोज़ख़ में जाना है।

इस आयत शरीफ़ा से मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के चेहरे बेहद स्याह होंगे। हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ने फ़रमाया, अगर दोज़ख़ियों में से कोई शख़्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाए, तो उसकी भयानक सूरत के मंज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले ज़रूर मर जाएं। इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत रोए।

सूरः मोमिनून में हैः-

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝ (سورۂ مومنون آیت ۱۰۴)

तल्फ़हु वुजू-ह-हुमुन्नारू व हुम फ़ीहा कालिहून। —सूरः मोमिनूनः104

'आग उनके चेहरों को झुलसती होगी और उसमें उनके मुंह बिगड़े होंगे।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'कालिहून' की तफ़्सीर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ी को आग जलाएगी, जिसकी वजह से उसका ऊपर का होंठ सुकड़ कर बीच सर तक पहुंच जाएगा और नीचे का होंठ लटक कर नाफ़ तक पहुंच जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

दोज़ख़ियों के आंसू

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रात सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, ऐ लोगो। रोओ और रो न सको तो रोने की सूरत बनाओ, क्योंकि दोज़ख़ी दोज़ख़ में इतना रोएंगे कि उनके आंसू उनके चेहरों में नालियां सी बना देंगे, रोते-रोते आंसू निकलने बंद हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेगा, जिस की वजह से आंखें ज़ख़्मी हो जाएंगी (मतलब यह कि आंसू और ख़ून की इतनी ज़्यादती होगी कि) अगर उनमें कश्तियां छोड़ दी जाएं तो वे भी चलने लगें।

—शर्हुस्सुन्नः

दोज़ख़ियों की ज़बान

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बेशक काफ़िर अपनी ज़बान एक फ़र्सख़[1] और दो फ़र्सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चल कर जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

दोज़ख़ियों के जिस्म

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दोज़ख़ में काफ़िर के दोनों मोंढों के दर्मियान का हिस्सा तीन दिन के रास्ते की बराबर लम्बा होगा, जबकि कोई तेज़ रफ़्तार सवार चल कर जाए और काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते की बराबर होगी। —मुस्लिम शरीफ़

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, काफ़िर की दाढ़ क़ियामत के दिन उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी रान बैज़ा पहाड़ के बराबर होगी और दोज़ख़ में उसके बैठने की जगह तीन दिन के रास्ते की बराबर लम्बी-चौड़ी होगी, जितनी दूर मदीना से रबज़ा गांव है। —मिश्कात

एक और रिवायत में है कि दोज़ख़ी के बैठने की जगह इतनी लम्बी होगी जितना मक्का और मदीना के दर्मियान का फ़ासला है।

—मिश्कात शरीफ़

फ़ायदाः— कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई 42 हाथ होगी और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में गुज़र चुका है कि तीन दिन की दूरी के बराबर होगी, मगर यह कोई मुश्किल बात नहीं, क्योंकि मुख़्तलिफ़ काफ़िरों को मुख़्तलिफ़ सज़ाएं होंगी, किसी को कम किसी को ज़्यादा।

कुछ रिवायतों में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत के कुछ लोग दोज़ख़ में इतने बड़े कर दिए जाएंगे

1. एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है। मालूम हुआ कि काफ़िर की ज़बान इतनी लम्बी हो जाएगी।

कि एक ही आदमी दोज़ख़ के पूरे एक कोने को भर देगा।

—तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझ से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, दोज़ख़ कितना चौड़ा है? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया, हां! ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम! तुम नहीं जानते, बेशक दोज़ख़ी के कान की लौ और मोंढे के दर्मियान सत्तर साल चलने का रास्ता होगा, जिसमें ख़ून और पीप की वादियां (नाले) जारी होंगी।

—तर्ग़ीब

पुल सिरात से गुज़र कर दोज़ख़ में गिरना

दोज़ख़ की पीठ पर पुल क़ायम किया जाएगा, जिसको पुल सिरात कहते हैं। तमाम नेक और बद लोगों को उस पर होकर गुज़रना होगा।

क़ुरआन शरीफ़ में है:

وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ○

व इम् मिन्कुम इल्ला वारिदुहा-का-न अ़ला रब्बि-क हत्मम मक़्ज़िय्या०

—सूरः मरयमः71

'और तुम में ऐसा कोई भी नहीं, जिसका उस दोज़ख़ पर गुज़र न हो, (क़ियामत के दिन) यह आपके रब पर लाज़िम (और) मुक़र्रर है।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ की पीठ पर पुल सिरात क़ायम किया जाएगा और मैं नबियों में सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर उस पर से गुज़रूंगा और उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे और उनका कलाम सिर्फ़ यह होगा—

اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ

अल्लाहुम्-म सल्लिम सल्लिम०

'ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख।'

फिर फ़रमाया कि जहन्नम में सादान[1] के कांटों की तरह मुड़ी हुई

1. एक कांटेदार पेड़ का नाम है जिसके कांटे बड़े-बड़े होते हैं।

कीलें हैं, जिन की बड़ाई अल्लाह ही को मालूम है। वे कीलें पुल सिरात पर चलने वालों को बद-आमालियों की वजह से घसीट कर दोज़ख़ में गिराने की कोशिश करेंगी, जिसके नतीजे में कुछ हलाक होकर (दोज़ख़ में) गिर जाएंगे (और कभी न निकल सकेंगे, ये काफ़िर होंगे) और कुछ कट-कटाकर दोज़ख़ में गिरेंगे और फिर नजात पा जाएंगे (ये फ़ासिक़ होंगे)।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ मोमिन पलक झपकने में गुज़र जाएंगे और कुछ बिजली की तरह जल्दी से गुज़र जाएंगे। और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़ घोड़ों और ऊंटों की तरह, इन रफ़्तारों में कुछ सलामती के साथ नजात पा जाएंगे और कुछ (कीलों से) छिल-छिलाकर छूट जाएंगे और कुछ दोज़ख़ में औंधे धकेल दिए जाएंगे।

—बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते थे कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगा। जब सब नेक व बद जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि तू अपनों को पकड़ ले, जन्नतियों को छोड़ दे। जहन्नम बुरों का निवाला कर जाएगा, जिनको वह इस तरह पहचानता होगा जैसे तुम अपनी औलाद को पहचानते हो, बल्कि उससे भी ज़्यादा।

—इब्ने कसीर

हासिल[1] यह है कि जन्नत वाले पार होकर जन्नत में पहुंच जाएंगे जिनके लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले हुए होंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में झोंक दिए जाएंगे, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने यों बयान फ़रमाया है:

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِیْنَ فِیْهَا جِثِیًّا ○

सुम्-म नुनज्जिल्लज़ी-नत्-तक़ौ व न-ज़-रूज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या०

—सूरः मरयमः72

'फिर हम उनको नजात देंगे जो डरा करते थे और ज़ालिमों को

1. ख़ुलासा, सार, मतलब।

उस (दोज़ख़) में ऐसी हालत में रहने देंगे कि घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।'

दाख़िले की सूरत

क़ुरआन शरीफ़ की आयतों में दोज़ख़ियों के दाख़िले की सूरत कई जगह बयान की गई है, जिनमें यह भी है कि दोज़ख़ी प्यास की हालत में जहन्नम रसीद किए जाएंगे और दोज़ख़ में जाने से पहले दरवाज़े पर खड़ा करके उनसे फ़रिश्ते सवाल व जवाब भी करेंगे। नीचे की आयतों से ये मज़्मून ख़ूब साफ़-साफ़ समझ में आ जाते हैं:–

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ○ (مریم:۸۶)

व नसूक़ुल मुज्रिमी-न इला जहन्-न-म विर्दा० —सूरः मरयम:86

'और हम मुज्रिमों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासा हांकेंगे।'

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ط ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ○

यौ-म युस्-हबू-न फ़िन्-नारि अ़ला वुजूहिहिम, ज़ूक़ू मस्-स-सक़र०

—सूरः क़मर:48

'जिस दिन मुज्रिम मुंह के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, तो उन से कहा जाएगा कि दोज़ख़ की आग का मज़ा चखो।'

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ○ لا وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ○

फ़-कुब्किबू फ़ीहा हुम वल्-ग़ावून० व जुनूदु इब्ली-स अज्-म-ऊन०

—सूरः शुअ़रा:94-95

'फिर वे और गुमराह लोग और इब्लीस का लश्कर सबके सब दोज़ख़ में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे।'

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ○

युअ़्-र-फ़ुल मुज्रिमू-न बिसीमाहुम फ़-युअ्-ख़-ज़ु बिन्नवासी वल्-अक़्दाम०

—सूरः रहमान:41

'मुज्रिम लोग अपने हुलिए से पहचाने जाएंगे। (क्योंकि उनके चेहरे स्याह और आंखें नीली होंगी), फिर उनके सर के बाल और पांव पकड़ लिए जाएंगे (और उनको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा)।'

तर्गीब व तर्हीब में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. का क़ौल इस आयत की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है कि मुज्रिम के हाथ और पैर मोड़कर इकट्ठे कर दिए जाएंगे। फिर लकड़ियों की तरह तोड़-मरोड़ दिया जाएगा (और जहन्नम में झोंक दिया जाएगा)।

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۙ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ○ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ۙ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ○ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ○ (سورہ صافات: ٢٢-٢٦)

उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-ल-मू व अज़्वा-ज-हुम व मा कानू यअ्बुदू-न॰ मिन दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम इला सिरातिल जहीम॰ व क़िफ़ूहुम इन्-न-हुम-मस्ऊलून॰ मा लकुम ला तना-स-रून॰ बल हुमुल यौ-म मुस्तस्लिमून॰

—सूरः साफ़्फ़ात:22-26

(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) 'जमा कर लो ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को और उनके माबूदों को, जिन को वे लोग ख़ुदा को छोड़ कर पूजा करते थे, फिर इन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ। (और फिर हुक्म होगा अच्छा ज़रा) उनको ठहराओ, उन से सवाल किया जाएगा (यह सवाल होगा) कि अब तुम को क्या हुआ, एक दूसरे की मदद नहीं करते। (इस पर भी वे एक दूसरे की कुछ मदद न करेंगे) बल्कि सब के सब सर झुकाए खड़े रहेंगे।'

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ○ (سورۂ احزاب: ٦٦)

यौ-म तुक़ल्लबु वुजू-हु-हुम फ़िन्नारि यक़ूलू-न या लै-तना अतअ्नल्ला-ह व अतअ्-नर्रसूला॰

—सूरः अहज़ाब:66

'जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पलट किए जाएंगे, वे यों कहते होंगे, ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत की होती।'

दोज़ख़ वालों से शैतान का ख़िताब

इधर तो दोज़ख़ी शैतान की बात मानने पर पछताते होंगे और अल्लाह की तरफ़ से ऊपर के ख़िताब के ज़रिए उन पर डांट पड़ेगी, इधर शैतान इस तक़रीर से उनको लताड़ेगा।

وقال الشيطن لما قضي الامر ان الله وعدكم وعد الحق
ووعدتكم فاخلفتكم ط وما كان لي عليكم من سلطن الا ان
دعوتكم فاستجبتم لي ج فلا تلوموني ولوموا انفسكم ط ما انا
بمصرخكم وما انتم بمصرخي ط اني كفرت بما اشركتمون من
قبل ط ان الظلمين لهم عذاب اليم ○ (سورہ ابراہیم ۲۲)

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रू इन्नल्ला-ह व-अ़-द-कुम वअ़्दल हक़्क़ि व वअ़त्तु-कुम फ़-अख़्लफ़्तुकुम, व मा का-न लि-य अ़लैकुम मिन सुल्तानिन इल्ला अन् दऔतुकुम फ़स्-त-जब्तुम ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ु-स-कुम, मा अना बिमुस्रि-ख़िकुम व मा अन्तुम बिमुस्रिख़िय्य, इन्नी कफ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन क़ब्लु, इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम अ़ज़ाबुन अलीम।
—सूरः इब्राहीम:22

और (क़ियामत के दिन) जब सब मुक़दमों का फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा (मुझे बुरा-भला कहना ना-हक़ है, क्योंकि) बिला शुब्हा अल्लाह ने तुम से सच्चे वादे किए थे और मैंने भी कुछ वादे किए थे, सो मैंने वे वादे तुमसे ख़िलाफ़ किए थे और तुम पर मेरा इससे ज़्यादा ज़ोर न चलता था कि मैंने तुमको (गुमराही की) दावत दी, सो तुमने (ख़ुद ही) मेरा कहना मान लिया। तुम मुझ पर मलामत मत करो और अपने आप को मलामत करो, न मैं तुम्हारा मददगार हूं और न तुम मेरे मददगार

हो। मैं तुम्हारे इस काम से खुद बेज़ार हूं कि तुम इससे पहले (दुनिया में) मुझे (खुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।'

दोज़खियों को वाक़ई बड़ी हसरत होगी, जबकि शैतान अपना अलग होना ज़ाहिर करेगा और हर क़िस्म की मदद और तसल्ली से अलग हो जाएगा। उस वक़्त दोज़खियों के गुस्से की जो हालत होगी, ज़ाहिर है।

गुमराह करने वालों पर दोज़खियों का गुस्सा

जो लोग गुमराह करने वाले थे, उन पर दोज़खियों को गुस्सा आएगा और उनसे कहेंगे:

إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ط

इन्-ना कुन्-ना लकुम त-ब-अन फ़हल अन्तुम मुग़्नू-न अन्ना मिन अज़ाबिल्लाहि मिन शैइन, —सूरः इब्राहीम:21

'हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम खुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो?'

वे जवाब देंगे:

لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ط سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ ○ (ابراہیم:۲۱)

लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम, सवाउन अलैना अ-ज-ज़िअ़ना अम सबर्ना मा लना मिम् महीस० —सूरः इब्राहीम:21

'(तुम्हें क्या बचाएं हम तो खुद ही नहीं बच सकते) अगर अल्लाह हमको बचने की कोई राह बताता तो तुम को भी वह राह बता देते। हम सब के हक़ में दोनों शक्लें बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों, चाहे ज़ब्त करें। हमारे बचने की कोई शक्ल नहीं।'

वे लोग गुस्से और जलन से भर कर गुमराह करने वालों के बारे में अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करेंगे। सूरः हामीम सज्दा में है:

رَبَّنَا اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ○

रब्बना अरिनल्लज़ै-नि अज़ल्लाना मिनल-जिन्नि वल-इन्सि नज्-अल्-हुमा तह्-त अक़्दामिना लियकूना मिनल अस्-फ़-लीन० सूरः हामीम सज्दाः29

'ऐ हमारे परवरदिगार! हमें वे शैतान और इन्सान दिखा दे, जिन्होंने हमें गुमराह किया, हम इनको अपने पैरों के नीचे कुचल डालें, ताकि वे ख़ूब ज़लील हों।'

दोज़ख़ के दारोग़ाओं और मालिक से अर्ज़-मारूज़

दोज़ख़ी अज़ाब से परेशान होकर अर्ज़-मारूज़ (गुज़ारिश) का सिलसिला शुरू करेंगे, दोज़ख़ के दारोग़ा से कहेंगे कि:

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ○

उद्ऊ रब्-ब-कुम युख़फ़्-फ़िफ़ अन्ना यौमम्-मिनल अज़ाबि० –सूरः मोमिनः49

'तुम ही अपने परवरदिगार से दुआ करो कि किसी एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे।'

वे जवाब देंगे:

اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ط

अ-व-लम तकु तअ्तीकुम रूसुलुकुम बिल बय्यिनाति, –सूरः मोमिनः50

'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोजिज़े लेकर नहीं आते रहे थे, (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बतलाते थे)'

इस पर दोज़ख़ी जवाब देंगे कि 'बला' यानी हाँ आते तो थे, लेकिन हमने उनका कहना न माना, फ़रिश्ते जवाब में कहेंगे:

فَادْعُوْا وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ○

फ़द्ऊ, व मा दुआउल काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल० –सूरः मोमिनः50

'तो फिर (हम तुम्हारे लिए दुआ नहीं कर सकते), तुम ही दुआ कर लो और (वह भी बे-नतीजा होगी) क्योंकि काफ़िरों की दुआ (आख़िरत में) बिल्कुल बे-असर हो।'

इसके बाद मालिक यानी दोज़ख़ के अफ़्सर के दरबार में दरख़्वास्त पेश करके कहेंगे:

يا مالك ليقض علينا ربك ط

या मालिकु लियक्ज़ि अलैना रब्बु-क, –सूरः ज़ुख़रुफ़:77

यानी ऐ मालिक! (तुम ही दुआ करो कि) तुम्हारा परवरदिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम तमाम कर दे।'

वे जवाब देंगे:

اِنَّكُمْ مٰكِثُوْنَ **इन्-न-कुम माकिसून०**

'तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे (न निकलोगे न मरोगे)।'

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि मुझे रिवायत पहुंची है कि मालिक अलै० के जवाब और दोज़ख़ियों की दरख़्वास्त में हज़ार वर्ष की मुद्दत का फ़ासला होगा।

इसके बाद कहेंगे कि आओ अपने रब से सीधे-सीधे दरख़्वास्त करें और उससे दुआ करें, क्योंकि इससे बढ़कर कोई नहीं है। वे अर्ज़ करेंगे:

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝ (سورة مومنون:١٠٦-١٠٧)

रब्बना ग़-ल-बत् अलैना शिक़्-व-तुना व कुन्-ना क़ौमन ज़ाल्लीन० रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अुद्ना फ़-इन्-ना ज़ालिमून०

–सूरः मोमिनून:106-107

'ऐ हमारे रब! (वाक़ई) हमारी बद-बख़्ती ने हमको घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे, ऐ हमारे रब! हमको इससे निकाल दीजिए, फिर हम अगर दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं।'

अल्लाह तआला जवाब में फ़रमाएंगे:

اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ۝

इख़्-सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमूनि० —सूरः मोमिनूनः108

'इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात न करो।'

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह जल्लशानुहू के इस इर्शाद पर हर क़िस्म की भलाई से नाउम्मीद हो जाएंगे और गधों की तरह चीख़ने-चिल्लाने और हसरत व दुख में लग जाएंगे।

—मिश्कात शरीफ़

इब्ने कसीर में है कि उनके चेहरे बदल जाएंगे, शक्लें बिगड़ जाएंगी, यहां तक कि कुछ मोमिन शफ़ाअ़त लेकर आएंगे, लेकिन दोज़ख़ियों में से किसी को पहचानेंगे नहीं, दोज़ख़ी उनको देख कर कहेंगे कि मैं फ़्लां हूं, मगर वे कहेंगे कि ग़लत कहते हो, हम तुमको नहीं पहचानते। 'इख़्-सऊ फ़ीहा' के जवाब के बाद दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाएंगे और वे उसी में सड़ते रहेंगे।

दोज़ख़ियों की चीख़-पुकार

सूरः हूद (आयत 106-107) में अल्लाह तआला का इर्शाद है:—

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا

फ़ अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़-फ़िन्-नारि लहुम फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व शहीक़ुन० ख़ालिदी-न फ़ीहा

'जो लोग शक़ी (बद-बख़्त) हैं, वे दोज़ख़ में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे और हमेशा हमेशा उस में रहेंगे।'

क़ामूस में है कि 'ज़फ़ीर' गधे की शुरू की आवाज़ को कहते हैं और 'शहीक़' उसकी आख़िरी आवाज़ को कहते हैं।

दोज़ख़ के अज़ाब से छुटकारे के लिए फ़िदया देना गवारा होगा

अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ
مِن سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (سورة الزمر ٤٧)

व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-ल-मू मा फ़िल अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म अ-हू लफ़्तदौ बिही मिन सूइल् अज़ाबि यौमल क़ियामति. —सूरः ज़ुमरः47

'और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन चीज़ों के साथ और भी इतनी चीज़ें हों तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए (बे-झिझक) उन सबको देने लगें।

सूरः मआरिज (आयतः11-14) में अल्लाह तआला का इर्शाद है:

يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝
وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ ۝

यवद्दुल मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अज़ाबि यौ-मि इज़िम बि-बनी-हि० व साहि-बति-ही व अख़ीहि० व फ़सी-लति-हिल्लती तुअ्-वीहि० व मन फ़िल अर्ज़ि जमीअ़न सुम्-म युन्जीहि०

कि, 'उस दिन मुज्रिम यह तमन्ना करेगा कि आज के अज़ाब से छूट जाने के लिए अपने बेटों को और अपनी बीवी और अपने भाई को और कुन्बे को, जिनमें वह रहता था और तमाम ज़मीन की चीज़ों को अपने बदले में दे दे और फिर यह बदला उसको बचा ले।'

लेकिन वहां न तो माल होगा, न कोई किसी के बदले में आना मंज़ूर करेगा और मान लो, ऐसा हो भी जाए, तो मंज़ूर न किया जाएगा, जैसा कि सूरः माइदा आयत 36 में ज़िक्र है:

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا
بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

इन्-नल्लज़ी-न क-फ़-रू लौ अन्-न लहुम मा फ़िल अर्ज़ि जमी अंव्-व मिस्लहू म-अ़-हू लियफ़्तदू बिही मिन अ़ज़ाबि यौमिल क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम व लहुम अ़ज़ाबुन अलीम०

'यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया की चीज़ें हों और इतनी चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उनको देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छूट जाएं, तब भी वे चीज़ें उनसे हरगिज़ क़ुबूल न की जाएंगी और उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।'

जन्नतियों का हंसना

क़ुरआन हकीम में फ़रमाया गया है कि जन्नती दोज़ख़ियों के हाल पर हंसेंगे। सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन (आयत 34-35) में है:

فالیوم الذین امنوا من الکفار یضحکون ۙ علی الارآئک ۙ ینظرون ؕ

फ़ल यौ-मल्लज़ी-न आ-म-नू मिनल.कुफ़्फ़ारि यज़्-ह-कून० अ़लल अराइकि यन्ज़ुरून०

'आज ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे, मसेहरियों पर बैठे उनका हाल देख रहे होंगे।'

तफ़्सीर दुर्रे मंसूर में हज़रत क़तादा रज़ि. से रिवायत है कि जन्नत में कुछ दरीचे खिड़की और झरोखे ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देख सकेंगे और उनका बुरा हाल देखकर 'बदले के तौर पर' उन पर हंसेंगे जैसा कि दुनिया में मोमिनों को देख कर ख़ुदा के मुज्रिम हंसते थे और कनखियों के इशारों से उनका मज़ाक़ उड़ाते थे और घरों में बैठ कर भी दिल्लगी के तौर पर ईमान वालों का ज़िक्र करते थे।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

ان الذین اجرموا کانوا من الذین امنوا یضحکون ۝

इन्-नल्लज़ी-न अज्-र-मू कानू मिनल्लज़ी-न आ-म-नू यज़्-ह-कून०

(मुतफ़्फ़िफ़ीन:29)

"मुजि्रम लोग ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते थे।"

सूरः मुअ्मिनून (आयतः109-111) में हैः

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ○ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ○ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ○

इन्नहू का-न फ़रीक़ुम मिन इबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुर्राहिमीन० फ़त्-त-ख़ज़्-तुमू-हुम सिख़्रिय्यन हत्ता अन्सौकुम ज़िक्री व कुन्तुम मिन्हुम तज़्-ह-कून० इन्नी ज-ज़ैतु हुमुल यौ-म बिमा स-ब-रु अन्नहुम हुमुल फ़ाइज़ून०

कि दोज़ख़ियों से अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद होगा कि मेरे बंदों में एक गिरोह (ईमान वालों का) था जो (हम से) अर्ज़ किया करते थे कि, 'हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आए, सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाइए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं।' तुमने उनका मज़ाक़ बना रखा था और यहाँ तक तुम उनका मज़ाक़ बनाने में मश्ग़ूल रहे कि उनके मश्ग़ले ने तुमको मेरी याद भी भुला दी। आज मैंने उनको उनके सब्र का यह बदला दिया कि वही कामियाब हुए।

सोचने और इब्रत हासिल करने के लायक़

दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात जो अब तक आपने पढ़े ये इसलिए नहीं लिखे गए कि सरसरी नज़र से पढ़ कर किताब अलमारी के सुपुर्द कर दी जाए और दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात को पढ़कर दूसरे क़िस्सों और कहानियों की तरह भुला दिया जाए।

हक़ीक़त यह है कि पिछले वाक़िए और हालात जो बयान किए गए हैं, चूंकि क़ुरआन की आयतों और नबी सल्ल० की हदीसों का तर्जुमा हैं, इसलिए बिला शक सही और वाक़ई हैं। अगर इनको बार-बार पढ़ा

जाए और अपनी बद-आमालियों पर नज़र की जाए तो सख़्त से सख़्त दिल वाला इन्सान भी अपनी ज़िंदगी को बहुत आसानी से पलट सकता है और अपने नफ़्स को दोज़ख़ के हालात समझाकर नेकियों के रास्ते पर डाल सकता है, बशर्ते कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सच्चा समझता हो और उनके बताए हुए दोज़ख़ के हालात को सही और वाक़ई मानता हो। मोमिन बंदे हमेशा अपनी ज़िंदगी का हिसाब करते रहते हैं और अल्लाह तआला शानुहू के दरबार में दोज़ख़ से पनाह में रहने की दुआ करते रहते हैं, भला हो सकता है कि जो शख़्स इन हालात को सही समझता हो, वह अपनी ज़िंदगी को दुनिया की लज़्ज़तों और फ़ना हो जाने वाली इज़्ज़त और दौलत के हासिल करने में गंवा दे। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ लज़्ज़तों में छिपा दिया गया है, जन्नत ना-गवारियों में छिपा दी गयी है। —बुख़ारी व मुस्लिम

यानी लज़्ज़तों में पड़कर ज़िंदगी गुज़ारने वाले वे काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में दोज़ख़ है और नफ़्स को ना-गवारियों में फंसाकर अच्छे अमल करने वाले वे काम कर रहे हैं, जिनके पर्दे में जन्नत है। आह! उन लोगों को जहन्नम के हालात का पता ही नहीं जो ख़ुदकुशी करके यह समझते हैं कि मुसीबत से छुटकारा हो जाएगा। और जो दुनिया की सख़्ती और मशक़्क़त से घबराकर यों कह देते हैं क्या ख़ुदा के यहां मेरे लिए दोज़ख़ में भी जगह नहीं है।

हक़ीक़त यह है कि अगर दोज़ख़ की आग, उसके साँप, बिच्छू, आग के कपड़े, अज़ाब के तरीक़े, दोज़ख़ की ख़ुराक वग़ैरह का ध्यान रहे तो म्युनिसिपैलटी और एसमबलियों की कुर्सियों के एज़ाज़ हासिल करने वाले, रूपया जमा करने वाले और बिल्डिंग व जायदाद बनाने वाले हरगिज़ हरगिज़ उन चीज़ों में पड़कर और बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होकर अपनी आख़िरत ख़राब नहीं कर सकते।

भला जिसे दोज़ख़ की भूख की ख़बर हो, वह रोज़ा छोड़ सकता है? और जो दोज़ख़ की बेचैनी को जानता हो, वह ज़रा सी नींद और फ़ानी

आराम के लिए नमाज़ बर्बाद कर सकता है? और जो दोज़ख़ के सांप, बिच्छुओं के डसने की जलन की ख़बर रखता हो, वह यों कह सकता है कि दाढ़ी रखने से खुजली होती है? जिन्हें 'जुब्बुल हुज़्न' की ख़बर हो, वे दिखावे के लिए इबादत कैसे कर सकते हैं और जिनको तस्वीर बनाने का अंजाम मालूम हो, वे तस्वीर बना सकते हैं? जिनको यह यक़ीन हो कि शराब पीने की सज़ा में दोज़ख़ियों के जिस्मों का धोवन या निचोड़ पीना पड़ेगा, वे शराब के पास जा सकते हैं? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

हक़ीक़त यह है कि जन्नत और दोज़ख़ के हालात सिर्फ़ ज़बानों तक ही महदूद (सीमित) रह गए हैं और यक़ीन के दर्जे में नहीं रहे, वरना बड़े गुनाह तो दूर की बात, छोटे गुनाहों के पास जाना भी सोचा नहीं जा सकता। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते थे कि अगर जन्नत और दोज़ख़ मेरे सामने रख दिए जाएं तो मेरे यक़ीन में ज़रा-सी भी बढ़ोतरी नहीं होगी यानी मेरा ग़ैब पर ईमान इतना मज़बूत है कि आँखों से देख कर भी उतना ही यक़ीन हो सकता है जितना बग़ैर देखे है, जिनको दोज़ख़ के हालात की ख़बर हो, वे गुनाह तो क्या करते इस दुनिया में न हंसते, न ख़ुशी मनाते।

अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम से दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है, मैंने मीकाईल को हंसते हुए नहीं देखा? अर्ज़ किया, जब से दोज़ख़ की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हंसे।

—अहमद

सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुमने वह मंज़र देखा होता जो मैंने देखा है तो तुम ज़रूर कम हंसते और ज़्यादा रोते! सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, आपने क्या देखा, इर्शाद फ़रमाया, मैंने जन्नत और दोज़ख़ देखे।

—तर्ग़ीब

हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ि. फ़रमाते थे, मुझे ताज्जुब है कि लोग हंसते हैं, हालांकि उनको दोज़ख़ से बचने का यक़ीन नहीं है। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक बार (मकान से) बाहर तशरीफ़ लाए और देखा कि लोग खिलखिला कर हंस रहे हैं, यह देखकर आपने फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (यानी मौत) को कसरत से याद करते तो तुम्हें इसकी फ़ुर्सत नहीं मिलती, जिस हाल में तुमको देख रहा हूं।

—मिश्कात शरीफ़

ग़रज़ यह कि होशियार वही है जो अपनी आख़िरत की ज़िंदगी बनाए और दो-चार दिनों के माल व दौलत, इ़ज़्ज़त व आबरू, ओहदा व हुकूमत के फंदों में पड़कर अपनी जान को दोज़ख़ के हवाले न करे, जब अज़ाब में फंसेगा तो पछताने और:—

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۚ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ

या लै-त-हा का-न-तिल क़ाज़ियः० मा अग़्ना अन्नी मालियः० ह-ल-क अन्नी सुल्तानियः०

—अल-हाक़्क़ा:27-29

"हाय काश! वह मौत ही ख़त्म कर देती, मेरे काम कुछ न आया मेरा माल, जाती रही मेरी हुकूमत।" कहने और हाथ मलने से कुछ हासिल न होगा। जन्नत जैसी आराम की जगह की तलब से लापरवाही और दोज़ख़ जैसे बे-मिसाल अज़ाब के घर से बचने की फ़िक्र से ग़फ़लत बे-अक़्लों ही का काम हो सकता है, कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत को तलब करो, जितना तुमसे हो सके और दोज़ख़ से भागो जितना तुमसे हो सके, क्योंकि जन्नत का तलबगार और दोज़ख़ से भागने वाला (लापरवाही की नींद) सो नहीं सकता।

—अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत यहया बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि आदमी बेचारा जितना तंगदस्ती से डरता है, अगर जहन्नम से उतना डरे तो सीधा जन्नत में जाए।

हज़रत मुहम्मद बिन मुंकदिर जब रोते थे तो आंसुओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और इसकी वजह यह बताते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि उस जगह जहन्नम की आग न पहुंचगी जहां आंसू पहुंचे होंगे।

एक अन्सारी ने तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी और बैठ कर बहुत रोए और कहते रहे कि जहन्नम की आग के बारे में अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूं। उनका हाल देख कर रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज तुमने फ़रिश्तों को रूला दिया।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गई, मगर आप नमाज़ में मश्गूल रहे। लोगों ने पूछा कि आपको ख़बर न हुई? फ़रमाया कि दुनिया की आग से आख़िरत की आग ने ग़ाफ़िल रखा।

एक साहब का क़िस्सा है कि रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाते और सोने की कोशिश करते, मगर नींद न आती थी, इसलिए उठ कर नमाज़ शुरू कर देते थे और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करते थे कि ऐ अल्लाह! आपको मालूम है कि जहन्नम की आग के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी फिर सुब्ह तक नमाज़ में मश्गूल रहते।

हज़रत अबू यज़ीद रह० हर वक़्त रोते ही रहते थे। इसकी वजह पूछी गई तो फ़रमाया कि अगर ख़ुदा का यों इर्शाद हो कि गुनाह करोगे तो हमेशा के लिए हम्माम (गुस्लख़ाना) में क़ैद किए जाओगे तो उसके डर से मेरा आंसू हरगिज़ न रूकेगा, फिर जबकि गुनाह करने पर दोज़ख़ से डराया जिसकी आग तीन हज़ार साल तक गर्म की गई है तो मेरे आंसू कैसे रूकें?

फ़अ्तबिरू या उलिल अब्सार०

तो ऐ अक़्ल वालो! (इन वाक़िआत से) सबक़ हासिल करो।

○ ○ ○

ख़ातिमा

दोज़ख़ से बचने की कुछ दुआएं

1. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिस तरह सहाबा रज़ि० को क़ुरआन की सूरः सिखाते थे, उसी तरह यह दुआ सिखाते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ. (ترغیب عن مسلم)

अल्लाहुम्-म इन्-नी अ-ऊज़ुबि-क मिन अज़ाबि जहन्-न-म व अ-ऊज़ुबि-क मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अ-ऊज़ुबि-क मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्-दज्जालि व अ-ऊज़ुबि-क मिन फ़ित्नतिल मह्या वल ममाति। —तर्ग़ीब अन मुस्लिम

2. हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अक्सर यह दुआ फ़रमाया करते थे:

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. (بخاری)

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव्-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव्-व क़िना अज़ाबन्नार। —बुख़ारी

3. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी 'मुस्लिम' रज़ि० को बतलाया था कि मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा:

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म अजिर्नी मिनन्-नार

कहा करो। अगर इसको कह लोगे और अगर उसी रात में मर जाओगे

तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी कर दी जाएगी और जब सुबह की नमाज़ पढ़ चुको और उसको इसी तरह (सात मर्तबा किसी से बोलने से पहले) कह लोगे और उसी दिन मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी कर दी जाएगी। —अबू दाऊद शरीफ़

4. रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है जो शख़्स तीन मर्तबा खुदा से जन्नत का सवाल करे तो जन्नत उसके लिए खुदा से दुआ़ करती है कि:

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ

अल्लाहुम्-म अदख़िल-हुल जन्-न-त

'ऐ अल्लाह! इसको जन्नत में दाख़िल कर दे।'

और जो आदमी तीन मर्तबा दोज़ख़ से पनाह चाहे तो दोज़ख़ उसके लिए खुदा से दुआ़ करता है कि:

اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म अजिर्हु मिनन्-नार।

'ऐ अल्लाह! इसको दोज़ख़ से बचा।' —तर्ग़ीब

○ ○ ○

आख़िरी बात

अब मैं इस किताब को ख़त्म करता हूं। सबक़ लेने वाली आँख रखने वालों के लिए थोड़ा भी बहुत है और ग़ाफ़िलों के लिए बड़े-बड़े दफ़्तर भी कुछ नहीं।

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि इस आजिज़ व मिस्कीन के हक़ में दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला अपनी रहमत से दुनिया व आख़िरत के तमाम अज़ाबों और तक्लीफ़ों से बचाए रखें और जन्नतुल फ़िर्दौस नसीब फ़रमाए। आमीन

मेरे वालिद मोहतरम सूफ़ी मुहम्मद सिद्दीक़ साहब ज़ी-द मज्दुहुम को भी दुआ-ए-ख़ैर में याद फ़रमाएं, जिनकी कोशिश से मैं क़ुरआन करीम की इस मज़्मून से मुताल्लिक़ आयतों को जमा करने और नबी सल्ल० की हदीसों को मुन्तख़ब करने (चुनने) के लायक़ हुआ।

جَزَاهُ اللّٰهُ عَنِّیْ جَزَآءَ خَیْرٍ فِیْ هٰذِهِ الدَّارِ وَفِیْ تِلْكَ الدَّارِ
وَاحْشُرْنِیْ وَاِیَّاهُ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ الْاَبْرَارِ. آمین.

ज-ज़ाहुल्लाहु अ़न्नी ज-ज़ा-अ- ख़ैरिन फ़ी हाज़िहिद्दारि व फ़ी तिल्कद्-दारि वह्शुर्नी व इय्याहु मअ़ल मुत्तक़ीनल अब्रारि- आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی
خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ الشَّفِیْعِ لِاُمَّتِهٖ یَوْمَ الدِّیْنِ وَعَلٰی اٰلِهٖ
وَصَحْبِهٖ هُدَاةِ الدِّیْنِ الْمَتِیْنِ.

व आख़िरु दअ़्-वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़-ल-मीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही सय्यिदिना मुहम्मदि-निश्शफ़ीअ़ि लि उम्मतिही-यौमद्दीनि व अ़ला आलिही व सह्-बिही हुदातिद्दीनिल-मतीन०

○ ○ ○